आचार्य की स्मृति में सारे भारत में संस्थाओं का जाल विछा है पर ऐसी कोई संस्था नहीं बनी थी जो आप के द्वारा प्ररूपित सिद्धांतों का प्रचार कर सके। आचार्य श्री ने सारा जीवन जैन साहित्य के विभिन्न पक्षों पर प्रमाणिक साहित्य तैयार किया। उनके साहित्य के प्रचार व प्रसार की कमी कई वर्षों से की जा रही थी। इस कमी को पूरा करने के लिए जैन चेयर में आचार्य आत्मा राम जैन भाषण माला की स्थापना, जैन चेयर के उद्घाटन के समय हुई। जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। इस भाषण माला में पंजाब के विद्वानों व विद्यार्थीयों को वहुत लाभ मिल रहा है।

इस भाषण माला के प्रथम भाषण कुलपति की अध्यक्षता में हुआ। पहले प्रवचन में बहुश्रुत भाषण श्रमण संघ के सलाहकार कवि श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने आचार्य श्री आत्मा राम व्यक्तिव व कृतित्व पर हुआ। पूज्य ज्ञान मुनि जी अपने नाम के अनुरूप महान् विभूति थे। आप साहित्य के अतिरिक्त समाज सेवा में अग्रसर रहते थे। आप ने अनेकों परोपकार के कार्य करने की प्रेरणा अपने भक्तों को दी है। आप श्रमण संघ के प्रथमाचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज के शिष्य हैं। आप का प्रवचन सिनेट हाल में रखा गया। जैन चेयर के प्रमुख डा० भट्ट ने श्री ज्ञान मुनि जी का परिचय देते हुए कहा "आप आचार्य श्री के विद्वान शिष्य हैं, आप ने लम्वे समय आचार्य श्री की सेवा की है। आप की श्रुत सेवा महान है। आज एक शिष्य के श्री मुख से अपने गुरू की महिमा सुनने का अवसर मिलेगा।" श्री ज्ञान मुनि जी का सन्मान वाईस चांसलर महोदय ने किया। उन्होंने भाषण माला का प्रधानगी भाषण देते हुए श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के पंजाबी होने के बावजूद उनको संस्कृत, प्राकृत व अपभ्रंश जैसी प्राचीन भाषाओं पर कार्य करने पर वधाई दी।

फिर श्री ज्ञान मुनि जी महाराज का भाषण शुरू हुआ। यह भाषण कम प्रवचन ज्यादा था। अपनी सरल भाषा में श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने अपने गुरू का गुणगान किया। उन्होंने अपने जीवन में चमत्कारी घटनाओं का वर्णन किया। श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने आचार्य श्री के अतिरिक्त जैन धर्म के विभिन्न आगमों पर प्रकाश डाला। प्रवचन के अंत में उन्होंने विद्वानों व विद्यार्थीयों की जिज्ञासाओं यथोचित समाधान किया। फिर धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत कर मुनि जी का श्रोताओं की ओर से धन्यवाद किया गया।

इस प्रकार भाषण माला का प्रथम भाषण संपन्न हुआ। इसके बाद इस भाषण माला को देश में ही नहीं, विदेशी विद्वान भी बुलाए गए। भारत के विद्वानों में आचार्य तुलसी का मंगलमय प्रवेश अपने आप में अनोखी घटना था। ४० साधु साध्वीयां युनिवर्सिटी कैम्पस में फैल गए सारे उत्तर भारत के श्रद्धालु इस समारोह में पधारे थे। यह समारोह भव्य था।

दूसरा मंगलमय प्रवचन गुरूणी उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का था। उसी दिन उन का परिचय हिन्दी पंजाबी में प्रकाशित किया गया। फिर साध्वी जी को जिनशासन प्रभाविका पद से विभूषित किया गया। सम्मान के रूप में एक शाल समर्पित किया गया। डा० हरमिंद्र सिंह कोहली ने अभिनंदन पत्र जैन शोध विभाग पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला की ओर से पढ़ा। यह किसी जैन साध्वी को प्रथम निमंत्रण था। इस से पहले कभी यूनिवर्सिटी ने ना तो किसी साध्वी को कभी भाषण के लिए निमंत्रण दिया, न ही सम्मानित किया गया। यह साध्वी जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटना थी। इस अवसर पर डा० एच.एस. कोहली, डा० धर्म सिंह व डा० सज्जन सिंह विशेष रूप से पधारे। जैन साध्वी

के जीवन को करीब से देखने का इन लोगों का प्रथम अवसर था। साध्वी श्री से अनेकों लोगों ने जैन धर्म व इतिहास के विषय में प्रश्न पूछे। हर प्रश्न का समाधान साध्वी श्री ने अपनी वुद्धि से दिया। उनका भाषण शेख सादी के फारसी के कलाम से हुआ। इस दिन मुझे पता चला आप उर्दू, फारसी भाषा की विदूषी भी थीं। यह प्रथम अवसर था कि साध्वी जी के प्रवचन से इतने विद्वान आकर्षित हुए। उन्होंने अपने वहुत से दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर महासाध्वी जी से पाया। वाईस चांसलर साहिव महासाध्वी के पदार्पण से प्रसन्न थे। उन्होंने कहा "आज मंगलमय महोत्सव है, हमारा यूनिवर्सिटी आंगन, आप जैसी भगवान महावीर की शिष्या को अपने मध्य पाकर प्रसन्न हैं। आप और आप का शिष्य परिवार हमें साक्षात् देवीय लगती हैं। आप व आप की शिष्या हर समय जप, तप, ध्यान में लीन रहती हैं। आप का अनुशासन प्रिय जीवन संयम की जीती जागती उदाहरण है। आप के हमारे यहां पधारने अभिनंदन करते हैं और इच्छा करते हैं कि भविष्य में भी आप हमारे यहां पधारते रहोगे। सभी का धन्यवाद डा० भट्ट ने किया। इस भाषण माला में वहुत से विद्वानों के दर्शन करने का सौभाग्य मिला, इन विद्वानों में जर्मन की प्रो० मेटे का प्रवचन प्रसिद्ध है। उन्होंने सूत्रकृतांग सूत्र के वीरथूई पर अपना प्रवचन दिया। अपने प्रवचन में आप ने फुरमाया "आर्य सुधर्मा कृत महावीर स्तुति मात्र गुरू वन्दना ही नहीं, यह स्तुति संसार की प्रथम कविता है। जिस में छंद, अलंकार, विशेषणों का शुद्ध प्रयोग प्रथम वार किया गया है। श्रीमती मेटे के वाक्य का कई विद्वानों ने वुरा मनाया। उन विद्वानों की मान्यता थी कि वेद संसार की प्रथम कविता हैं। वह प्रारम्भ से गाकर पढ़े जाते रहे हैं। सो आप का कथन ठीक प्रतीत नहीं होता । डा. मेटे का उत्तर

था "चाहे वेद या अन्य ग्रंथों को गाकर पढ़ने की प्राचीन परम्परा है पर यह कविता के सारे नियम पूरे नहीं करते। कविता के अपने नियम हैं अपना विषय हे। इस दृष्टि से यह संपूर्ण प्रथम स्तुति है।

डा० मेटे अपने विचारों पर दृढ थी। उन्हें हमारा लिखित पंजावी साहित्य भेंट किया गया। चाहे श्रीमती मेटे पंजावी नहीं जानती थीं फिर भी उन्होंने हमारे साहित्य की प्रशंसा करते हुए हसे मील का पत्थर वताया। यह साहित्य उन्होंने वर्लिन विश्वविद्यालय की लाईब्रेरी में रखने का निर्णय किया।

फिर इस भाषण माला में श्री अगर चन्द नाहटा वीकानेर व श्रीमती शारदा गांधी का हिन्दु व जैन रामायण पर भाषण हुआ। श्री नाहटा का नाम भारतीय साहित्य, पुरात्तव, हस्तलिखित विषयों में जाना माना नाम है। वह कुछ समय मेरे घर मेहमान रहे। मारवाड़ी पहरावे में वह पधारे थे। कोई लिखित भाषण उनके हाथ में नहीं था। वह अपने भाषण से एक दिन पहले पधारे थे। रात्रि को वह मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन के यहां रूके। श्री नाहटा शुद्ध धार्मिक वृति के श्रावक थे। सारी रात्रि समायिक करते थे। सुवह उठ कर ही देव पूजा करने के वाद ही भोजन लेने का उनका नियम था। उनकी अपनी लाईब्रेरी एक यूनिवर्सिटी से वढ़कर है। उन्होंने हिन्दी के रासो साहित्य को साहित्य को अवगत कराया। सारे भारत में भ्रमण कर हस्तलिखित भण्डारों की सूची वनाई। वह इतिहास केसरी थे। सैंकडों ग्रंथ उन्होंने संपादित किए थे। वह मामूली पढ़े लिखे थे। परन्तु उन्होंने अपनी शिक्षा से सैंकडों विद्वानों का निर्माण किया। उन्होंने साधु साध्वीयों के शास्त्रों का अध्ययन कराया। अनेकों विदेशी विद्वान भी इनसे प्रभावित थे।

यह भाषण माला काफी ज्ञानवर्धक रही है। इस भाषण माला में हमें जैन विद्वान डा० कैलाश चन्द जैन का प्रसिद्ध विषय जैन धर्म में ईश्वर की अवधारणा के वारे में भाषण सुनने को मिला। डा० जैन भारतीय ज्ञान पीठ के प्रमुख सम्पादक रहे हैं। आप दिगम्बरों ग्रंथों के प्रकाशक पंडित माने जाते हैं। जैन धर्म की ईश्वर की धारणा इतनी विचित्र है कि कई लोग जैन धर्म को नास्तिक तक कह देते हैं। इसका कारण जैन धर्म का ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता न मानना व वेदों का विरोध है। इस सव के वावजूद जैन धर्म परलोक, पुर्नजन्म, कर्म, नरक, स्वर्ग, मोक्ष को मानना है। वेद को मानने से अगर कोई आस्तिक कहलाता है, तो इस्लाम, यहुदी, मुसलमान, सिक्ख व भक्ति मार्ग के संत भी नास्तिक ठहराएंगे। ब्राह्मणों की इस परिभाषा का डा० जैन ने खुल कर खण्डन किया। जैनों की ईश्वर के प्रति विचारधारा को उन्होंने स्पष्ट शब्दों मे व्यक्त किया। यह चर्चा हिन्दी में के कारण सरल व स्पष्ट थी। लोगों को जैन धर्म की ईश्वर के प्रति अवधारणा, निर्वाण, आत्मा व कर्म सवंधी विचारों का पता चला। विद्वानों के प्रश्नों का उत्तर भी डा० केलाश चन्द्र जैन ने दिया।

इन भाषणों में एक महत्वपूर्ण नाम है डा० जगदीश चन्द्र जैन बम्बई का नाम उल्लेखनीय है। अपनी स्मृति में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया है। वह भी दो वार भाषण देने पधारे। वह किसी समय चीन में भारत के राजदूत कार्यलय में हिन्दी पढ़ाते थे। आप ने प्राकृत भाषा का इतिहास ग्रंथ लिखा, प्राचीन जैन तीर्थ नामक पुस्तक, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यापीठ वाराणसी में प्रकाशित हो चुकी है। इन का एक भाषण जैन शासन देवी

वात हो रही है। भारत में जैन प्रारम्भ से ही अल्पसंख्यक रहे हैं। १९९२ में अल्पसंख्यक आयोग को कानूनी मान्यता मिली, तो जैनों का नाम निकाल दिया गया। जव पुनः सरकार तैयार हुई, तो समय बीत चुका था। कई लोग अल्पसंख्यक का अर्थ आरक्षण लगाते हैं। यह विल्कुल गल्त है। क्योंकि भारत में आरक्षण मात्र पछड़ी श्रेणी व अनुसूचित जाति के लिए है, धर्म के लिए कोई आरक्षण नहीं। कुछ लोग तर्क करते हैं कि ऐसा करने से जैन लोग नीच जातियों में माने जाएंगे। दोनों की वातें गलत हैं। यह मांग जैन लोग इस लिए कर रहे है कि जैन धर्म को स्वतंत्रता वनी रहे। सांस्कृतिक पहचान वनी रहे। हाला कुछ आर.एस.एस. से प्रभावित नेता धीमे स्वर में इसका विरोध करते हैं। अगर धर्म को जाति नीच ही मानी जाए तो क्या सिक्ख नीच हैं ? पिछड़ी श्रेणी में, कई दक्षिण भारतीय जातियां हैं उनमें जैन हैं वह अपनी जाति के कारण हैं, धर्म के कारण नहीं ? यह इतिहासक पहचान को वनाए रखने का मामला है। जिस के लिए हमारे पूर्व आचार्यों ने कुरवानी दी थी।

आज भारत में मध्य प्रदेश, विहार, तामिलनाडू, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा ने जैन को अल्पसंख्यक दर्जा प्रदान कर दिया है। सव से वडा दवाव केन्द्र सरकार पर वढ़ा है। अगर जैन यह दर्जा नही लेते तो जैनों को अपने संस्थान, अपनी इच्छा से चलाने असंभव हैं। क्योंकि आज के युग में जो संस्थान जैन अपने धन से खोलते है, अल्पसंख्यक दर्जा मिलते ही उनमें ५० प्रतिशत विद्यार्थी आरक्षित हो जाएंगे। दूसरा जैन मन्दिर, जो स्वयं जैन चलाते हैं, यह दर्जा मिलने के कारण सरकार के हाथों में सीधे चले जाएंगे। वैसे केन्द्र सरकार को इस में एतराज नहीं होना चाहिए। परन्तु राजनेतिक इच्छा शक्ति की कमी

जानें जा चुकी हैं। यह भूचाल २६ जनवरी २००१ को आया था। लाखों लोग बेघर हो गए। सारे विश्व से सहायता आ रही है। दुख की बात है, कि यह सारे शहर जैन बहुसंख्यक थे। कई जैन मन्दिरों का नुकसान हुआ। ३५ के करीब साधु साध्वीयों के पता नहीं चल सका। जैन समाज ने गुजरात राहत कोष में विपूल धन देकर सहायता कार्य को आगे बढ़ाया। वीरायतन राजगृही और श्री नकोड़ा पार्श्वनाथ ट्रस्ट का कार्य उल्लेखनीय है जो अब भी चल रहें हैं। इस से ज्यादा भगवान महावीर के सिद्धांतों की अच्छी पालना और क्या हो सकती है।

देहली में एक राष्ट्रीय समारोह सम्पन्न हो चुका है। इस वर्ष को अहिंसा वर्ष के रूप में मनाया जाना है। सारा साल समारोह मनाए जाने हैं। नए प्रकाशन हो रहे हैं। पहले हमारी २५वीं समिति पंजाब जो महावीर निर्वाण शताब्दी समिति के बैनर तले प्रकाशन व अन्य कार्य करती थी, अब यही समिति, जन्म कल्याणक समिति के बैनर तले कार्य कर रही है। इस के अभी पांच प्रकाशन हो चुके हैं। इनमें साध्वी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज की ३ अनापूर्वी का प्रकाशन है। सचित्र कथा की पुस्तक नन्दन मणिकार हैं एक हमारा ग्रंथ सचित्र भगवान महावीर है। समिति मुझे संयोजक मान कर कार्य कर रही है। इसके कार्यकारिणी सचिव मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन है।

यह वर्ष कार्य का वर्ष है। इस में भारत सरकार टिकट जारी कर चुकी है। महावीर वनस्थली दिल्ली का विकास कर रही है। सरकारी समिति भगवान महावीर मैमोरीयल को संपूर्ण करने का निश्चय कर चुकी है। यह वर्ष अहिंसा वर्ष है। इस वर्ष जैन समाज में अपने अधिकारों के प्रति चेतना जागी है। जैन धर्म को अल्पसंख्यक दर्जा देने की

बात हो रही है। भारत में जैन प्रारम्भ से ही अल्पसंख्यक रहे हैं। १९९२ में अल्पसंख्यक आयोग को कानूनी मान्यता मिली, तो जैनों का नाम निकाल दिया गया। जब पुनः सरकार तैयार हुई, तो समय बीत चुका था। कई लोग अल्पसंख्यक का अर्थ आरक्षण लगाते हैं। यह बिल्कुल गल्त है। क्योंकि भारत में आरक्षण मात्र पछड़ी श्रेणी व अनुसूचित जाति के लिए है, धर्म के लिए कोई आरक्षण नहीं। कुछ लोग तर्क करते हैं कि ऐसा करने से जैन लोग नीच जातियों में माने जाएंगे। दोनों की बातें गलत हैं। यह मांग जैन लोग इस लिए कर रहे है कि जैन धर्म को स्वतंत्रता बनी रहे। सांस्कृतिक पहचान बनी रहे। हाला कुछ आर.एस.एस. से प्रभावित नेता धीमे स्वर में इसका विरोध करते हैं। अगर धर्म को जाति नीच ही मानी जाए तो क्या सिक्ख नीच हैं ? पिछड़ी श्रेणी में, कई दक्षिण भारतीय जातियां हैं उनमें जैन हैं वह अपनी जाति के कारण हैं, धर्म के कारण नहीं ? यह इतिहासक पहचान को बनाए रखने का मामला है। जिस के लिए हमारे आचार्यों ने कुरबानी दी थी।

आज भारत में मध्य प्रदेश, बिहार, तामिलनाडू, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा ने जैन को अल्पसंख्यक दर्जा प्रदान कर दिया है। सब से बडा दबाव केन्द्र सरकार पर बढ़ा है। अगर जैन यह दर्जा नही लेते तो जैनों को अपने संस्थान, अपनी इच्छा से चलाने असंभव हैं। क्योंकि आज के युग में जो संस्थान जैन अपने धन से खोलते है, अल्पसंख्यक दर्जा मिलते ही उनमें ५० प्रतिशत विद्यार्थी आरक्षित हो जाएंगे। दूसरा जैन मन्दिर, जो स्वयं जैन चलाते हैं, यह दर्जा मिलने के कारण सरकार के हाथों में सीधे चले जाएंगे। वैसे केन्द्र सरकार को इस में एतराज नहीं होना चाहिए। परन्तु राजनेतिक इच्छा शक्ति की कमी

होने के कारण सरकार ऐसा नहीं कर पा रही।

आज भी भारत में अनेकों संस्थाएं जैन धर्म के प्रति विषवमन कर रही हैं। वह जैन मुनियों को जला देती है। प्रतिमाओं का अपमान करती है। अपनी खरीदी सम्पति पर मंदिर नहीं वनाने देती। जैन समाज को वह वर्ग भी अव यह सोचने को मजबूर हो गया है, जो कभी अल्पसंख्यक दर्जा को विरोध करता था। इस वात को ध्यान में रखकर मुझे पंजाव राज्य कांग्रेस में अल्पसंख्यक प्रकोष्ट में उपसभापति नियुक्त किया गया। इस का अच्छा उत्तर मिला। जैन समाज अपने अधिकारों को समझने लगा है। जिन राज्य सरकारों का मैंने वर्णन किया है उनकी विधानसभा ने यह पास किया है। दर असल राज्य सरकारों का विषय है। जैन समाचार पत्रों में इस विषय की चर्चा है। भारत के मान्नीय उच्चत्म न्याययालय ने इसे राज्यों का विषय माना है।

वाकी अधिकतर संस्थाओं में जन्म कल्याणक महोत्सव पर भव्य योजनाएं सामने आ रही हैं। इनमें एक योजना हमारे पंजाव में आचार्य श्री विमल मुनि जी महाराज ने प्रस्तुत की है। इस योजना का नाम है "आदिश्वर धाम"। सन्मति नगर कुप्प कलां में ७० बीघा जमीन में एक कम्पलैक्स तैयार हो रहा है। इस में मूलनायक भगवान ऋषभदेव हैं, इस में दादावाड़ी है। एक २४ तीर्थंकरों का भव्य मन्दिर व म्यूज्यिम वन रहा है। दादावाडी में प्रभावक आचार्य साधु व साध्वी की प्रतिमाएं हैं। इसी के प्रांगन में गौ सदन, साधु उपाश्रय, साध्वी उपाश्रय, भोजनालय का भी निर्माण हो चुका है। मंदिर का कार्य लम्वा है। जो चल रहा है। धर्मशाला निर्माणाधीन है। मूल भव्य मंदिर का निर्माण चल रहा है।

इसी भव्य प्रांगण में हमने अपनी गुरूणी स्व० उपप्रवर्तनी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज के नाम से पुस्तकालय

का निर्माण करवाया है। साध्वी श्री स्वर्ण कांता के गुरू भक्त इसमें सम्पूर्ण रूप से सहयोग दिया। यह भवन उसी समय तैयार हो गया था जब हमारी गुरूणी बीमार थीं। उनकी शिष्याएं साध्वी गुरूणी सुधा जी महाराज व साध्वी राजकुमारी जी महाराज का आर्शीवाद व सहयोग हमें इस संदर्भ में मिलता रहा है। इस भव्य भवन में हमारे परिवार का भी कुछ सहयोग रहा है।

इसी संदर्भ में साध्वी श्री महिमा श्री के नाम का उल्लेख करना जरूरी है। वह मालेरकोटला में तीर्थंकर साधना केन्द्र की संचालिका हैं। उन्होंने अनेकों बच्चों को जैन धर्म पढाया है। उन्होंने मेरा सम्मान पर्यूषण पर्व पर जैन समाज रत्न से किया। उनके इस केन्द्र निर्माण में मेरे धर्मभ्राता श्री रविन्द्र जैन का भी सहयोग रहा है। शुरू से वहां भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान करने का भाव था। इसी बात को ध्यान में रख कर इसी वर्ष उन्होंने एक दर्शनीय जैन मंदिर का निर्माण किया। इस के समारोह में मुझे मुख्य अतिथि घोषित किया गया। प्रतिमा के नीचे मुझे निर्देशक लिख कर सम्मानित किया गया। जीवन में प्रथम बार मैंने जिन प्रतिमा के १८ अभिषेक देखे। इतना भव्य समारोह पहले कभी साध्वी जी के यहां नहीं हुआ था। बाहर से लोग आये। अभिषेक पूजा श्री महेन्द्र जैन मस्त देव दर्शन धूप समाना वालों ने करवाई। बाद में स्नात्र पूजा में मैंने भाग लिया।

इस प्रकार २६वीं महावीर जन्म कल्याणक पर राज्य स्तरीय समारोह लुधियाना में हुआ। जिस में दूसरी बार समस्त जैन समाज इकट्ठा हुआ। मुख्यमंत्री पंजाब ने अढाई करोड़ रूपए भगवान महावीर स्मारक के लिए घोषित किए जो उन्होंने शीघ्र ही समिति को सौंप दिए। इन रूपयों से

खन्ना लुधियाना रोड़ पर ११ ऐकड़ का भूखण्ड खरीदा गया है। जिस पर जैन समाज भगवानी महावीर का सुन्दर स्मारक सभी जैन सम्प्रदायों के सहयोग से निर्माण कर रहा है।

पंजाब सरकार ने सोने व चांदी के सिक्के एग्रो इंडस्टरी के माध्यम से जारी किए। इसी संदर्भ में भारत सरकार ने पांच रूपए का करंसी सिक्का व सौ रूपए का यादगारी सिक्के जारी किए। इनका विमोचन माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल विहारी वाजेपायी जी ने किया। सरकार ने इस शताब्दी वर्ष में जैन तीर्थों के रख-रखाव पर काफी ध्यान दिया गया है। इसके लिए जैन संस्थाओं को उचित अनुदान भी दिया है।

प्रकरण - ८

मेरा अन्य संस्थाओं से संबंध

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है। वह समाज से कुछ प्राप्त करता है। समाज को कुछ देता है। इसी संदर्भ में जहां मैंने पिछले प्रकरण में अपने द्वारा स्थापित संस्थाओं का उल्लेख किया है। अब इस प्रकरण में मैं उन संस्थाओं का वर्णन करूंगा, जिनसे मेरा संबंध रहा है। जिन संस्थाओं ने मुझे अपनी संस्थाओं में स्थान देकर सेवा का सुअवसर प्रदान किया है। इन संस्थाओं में सर्वाधिक संस्थाएं विश्वधर्म सम्मेलन संस्थापक, प्रसिद्ध अंतराष्ट्रीय जैन आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज की संस्थाएं है। इन में कुछ संस्थाओं का वर्णन इस प्रकार है :

विश्वधर्म संगम :

आचार्य श्री सुशील कुमार जी इस के संस्थापक थे। इस संस्था का उद्देश्य संसार के सभी धर्मों को एक मंच पर लाना था। इस कार्य में आचार्य श्री के विश्वभर के धार्मिक, समाजिक व राजनैतिक नेताओं का महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा। इन में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी, डा० राधाकृष्ण व प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू व इंदिरा गांधी के नाम उल्लेखनीय हैं। इस संस्था की सारे विश्व में शाखाएं हैं। मैं इस संस्था का डैलीगेट सदस्य हूं।

इंटरनैशनल जैन कान्फ्रैंस :

जैनाचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज द्वारा स्थापित इस संस्था का उद्देश्य संसार भर के जैनों को एक मंच पर लाना है। आचार्य श्री ने अपने जीवन काल में इस

संस्था का विकास संसार भर में किया। उनकं जीवन में ३ सम्मेलन विदेशों में हुए। जिनका मुझे विधिवत् निमंत्रण मिला। मूझे नई दिल्ली में हुए सम्मेलन में शामिल होने का सौभाग्य मिला। मैं तब से इस संस्था का डैलीगेट मैंवर हूं। इस सम्मेलन पर हम ने पंजावी साहित्य भी भेंट किया था।

इंटरनैशनल जैन कांग्रेस :

इस जैन कान्फ्रैंस का विस्तार रूप कांग्रेस के रूप में आया। इस के कई सम्मेलन विदेशों की धरती पर हुए। एक सम्मेलन भारत में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हुआ। तव विशाल पुस्तक प्रर्दशनी का भव्य आयोजन हुआ। सारे संसार से जैन विद्वान यहां शामिल हुए। इसका मुख्यात्य सिद्धाचलम न्यू-जर्सी यू.एस.ए. में है।

श्री महावीर जैन संघ पंजाब (लुधियाना) :

इस संस्था का मैं उपप्रधान हूं। इस के माध्यम से भगवान महावीर का २५०० साला निर्वाण महोत्सव मनाया गया।

महावीर इंटरनैशनल :

यह समाज सेवी संस्था है। इस की स्थापना जयपूर में हुई थी। मुझे इस के जयपुर अधिवेशन में शामिल होने व डैलीगेट बनने का अवसर मिला। मैं मालेरकोटला शाखा का संयोजक बना। इस संस्था ने दीन दुखीयों की सेवा में क्षेत्र में वहुत कार्य किया है। विशेषतः विकलांगों के लिए निशुल्क अंग लगाने की व्यवस्था ये संस्था आज भी कर रही है।

विश्व पंजाबी लेखक सम्मेलन :

यह संसार के पंजावी लेखकों की संस्था है। इस के दो सम्मेलनों में मैं डैलीगेट रहा हूं। इस संस्थाओं के

सम्मेलन विश्व के कोने कोने में होते रहते हैं। इस संस्था के प्रथम सम्मेलन को प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संवोधन किया अंतिम दिवस राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने संवोधिन किया। इन सम्मेलनों के माध्यम से हमें लेखकों से मिलने का मंच मिला। इस का एक सम्मेलन इस वर्ष चंडीगढ़ व लाहौर में हो चुका है। चण्डीगढ़ के सम्मेलन में मैंने भाग लिया था। इस में पाकिस्तानी पंजाबी लेखकों से मिलना हुआ।

अंर्तराष्ट्रीय महावीर जैन मिशन :

इस संस्था की स्थापना संसार में जैन धर्म के प्रचार हेतु की थी। इस संस्था में कार्य करने का मुझे सौभाग्य मिला है। इस संस्था के माध्यम से आचार्य श्री सुशील कुमार जी ने जैन संस्थाओ का अंतराष्ट्रीय स्तर पर जाल विछा दिया। इस संस्था ने वहुत से अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन किए हैं। इस संस्था की सव से वडी देन न्यूजर्सी में सिद्धांचल जैन तीर्थ है। इस संस्था ने संसार के कोने कोने में जैन मंदिर, आश्रम व ध्यान केन्द्रों की स्थापना की है।

विश्व अहिंसा संघ :

अहिंसा प्रेमियों के लिए यह सुन्दर मंच है। इस में हर धर्म, क्षेत्र, जाति, रंग के भेद के विना शामिल हो सकता है। इस के एक सम्मेलन में मुझे डेलीगेट वनने का सौभाग्य मिला। इस की स्थापना आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज ने की थी। यह अहिंसा, पर्यावरण व पशु कल्याण हेतु कार्य करने वाली संस्था है।

विश्व हिस्टरी कांफ्रेंस :

यह कांफ्रेंस पंजावी यूनिवर्सिटी पटियाला में होती है। मैं कई वर्षों से लगातार डैलीगेट चला आ रहा हूं। इस

कांफ्रेंस में इतिहासकारों से अच्छी भेंट हो जाती है। इतिहास के बारे में विमर्श हो जाता है।

पंजाबी साहित्य अकादमी लुधियाना :

यह संसार के पंजाबी लेखकों की केन्द्रीय संस्था है। जिसे सरकार की सहायता प्राप्त है। इस के सदस्य बनने के लिए पहली शर्त है कि कम से कम ३ पुस्तकें पंजाबी भाषा में प्रकाशित हो चुकी हों। हम दोनों इस संस्था के लाईफ मैंबर हैं। इस के चुनावों में हमें भाग लेने का सौभाग्य मिला है।

आचार्य सुशील कुमार जैन मैमोरीयल ट्रस्ट :

इस संस्था की स्थापना आचार्य साध्वी डा० साधना जी महाराज ने, आचार्य श्री सुशील कुमार जी के स्वर्गवास के बाद की थी। इस का उद्देश्य आचार्य का स्मारक बनाना था। साध्वी जी की आज्ञानुसार स्मारक का कार्य चल रहा है। इस स्मारक की १०० सदस्यों वाली विश्व स्तरीय कमेटी के हम दोनों सदस्य हैं।

साध्वी स्वर्ण अभिनंदन ग्रंथ समिति :

उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की ५०वीं दीक्षा जयंती पर, गुरुणी के भक्तों ने इस समिति का निर्माण किया था। समिति में मुझे संयोजक रखा गया। अभिनंदन ग्रंथ में मुझे प्रधान सम्पादक बनाया गया। इस समिति के तत्वाधान में अभिनंदन ग्रंथ छपा।

आदिश्वरधाम :

आदिश्वर धाम के संस्थापक जैन आचार्य श्री विमल मुनि जी महाराज हैं। उन्होंने इस ट्रस्ट की कार्यकारिणी का उप-प्रधान नियुक्त किया है। मैं जितनी सेवा इस संस्था की करना चाहता हूं, वह पर्याप्त नहीं। इस संस्था के कार्य में

मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन बहुत सहायक हैं। वह हर कार्य में मेरे से विमर्श करते हैं। साध्वी स्वर्णा जैन पुस्तकालय इसी विमर्श का फल है। इस पुस्तकालय को साध्वी गुरूणी श्री सुधा जी महाराज ने पुस्तकों का सहयोग दिया है। यह धाम जैन मुनि श्री विमल चन्द्र चैरिटेवल, सन्मति ट्रस्ट के आधीन कार्य करता है। ट्रस्ट की संस्थाएं कुप्प, जगराओं, जालंधर, उदमपुर, जम्मू व पठानकोट व रणवीर सिंह पुरा में हैं। यह संस्था अनेको स्कूलों, कालेजों, सिलाई स्कूलों, साईंस कालेजों, मंदिरों, गौ सदनों व उपाश्रयों को चलाती है। कुप्प में भव्य जैन मंदिर वन रहा है जिसकी आधारशिला आचार्य श्री नित्यानंद जी महाराज ने की थी। सारे भारत में यह स्थान जैन कला, स्थापत्य व संस्कृति का केन्द्र वन पाएगा। हमारी गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का यह अनुपम व शाश्वत स्मारक होगा। यह संस्था पंजाब का भविष्य में नाम करेगी। इस संस्था की संचालिका साध्वी डा० जैन भारती जी महाराज हैं। जो ३० वर्षों से संस्था की सेवा कर रही हैं। उनके साथ उनकी शिष्याएं भी सेवा कर रहीं हैं।

श्री श्वेताम्बर आदिश्वर धाम जैन मन्दिर सोसाईटी :

यह कुप्प में वन रहे मंदिर का भाग है। मैं इस कमेटी का सदस्य हूं। मेरा धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन इस संस्था का सचिव है। मंदिर निर्माण की जिम्मेवारी गुरूदेव ने इस संस्था को सौंप रखी है। इस मंदिर की सारी प्रेरणा गुरूदेव को शिष्या डा० जैन भारती साध्वी, साध्वी श्री रमा भारती व साध्वी श्री आशा भारती जी हैं। इस मन्दिर को खरतरगच्छ के प्रसिद्ध उपाध्याय गणिमणि प्रभवसागर जी महाराज ने २४ जैन प्रतिमाएं श्री जिनकान्ति सागर ट्रस्ट

मांडवला के माध्यम से इस मन्दिर को भेंट की हैं।

अल्पसंखयक प्रकोष्ट के वाईस चेयरमैन :

मैं पंजाब प्रदेश कांग्रेस के अल्पसंख्यक प्रकोष्ट का उप-सभापति रह चुका हूं। मेरा शुरू से विश्वास रहा है कि जैन धर्म एक अल्पसंख्यक धर्म है। गिनती में कम है। कम का कम के रूप में मान्यता न देना अपराध है। हमारे नेता जो संविधान के प्रति आस्था रखने की प्रतिज्ञा करते हैं पर संविधान का पालन ५२ सालों में नही कर पाए। संविधान की धारा २५(४) में जैन, वौद्ध व सिक्खों को अल्प संख्यक माना गया है। उनके विशेष अधिकार निश्चित हैं। वह अपनी संस्थाएं अपनी आस्था के अनुसार चला सकते हैं। पर एक विशेष राजनैतिक दल में अधिकारी जैन होने के कारण यह मांग दवा दी गई। पूर्व समाज भलाई मंत्री श्री रामूवालीया मंत्री व अल्पसंख्यक आयोग जव जैनों को यह अधिकार देने को तैयार हुए तो एक राजनैतिक पार्टी ने इस वात का विरोध किया कि हम हिन्दू समाज का अंग हैं। हमें यह दर्जा नहीं लेना।

सरकार ने समझ लिया कि जैन लोगों का कोई राजनैतिक संगठन नहीं। इस लिए इस मांग को ठण्डे बस्ते में डाल रखा है। पर अब जब जैनों पर जालोर, पाली में जुल्म हुए, उनके मकान तोड़े गए, मुर्तियां तोड़ी गई तो जैनों की नींद खुली अब विरोध करने वाली पार्टियां भी दवी जुवान से जैनों की मांग इस का समर्थन करती है। मुझे शुरू से कांग्रेस से लगाव रहा है। इस चुनाव में चौधरी अब्दुल गुफार चेयरमैन ने प्रमुख भाग लिया। मैं वाईस चेयरमैन वना। कांग्रेस के दिल्ली कांग्रेस हैड-क्वांटर पर जाने का सौभाग्य मिला। अल्प संख्यकों पर इस वर्ष अलवर में जुल्म हुए। ईसाई मिशनरी डाक्टर को जिंदा जला दिया गया। शांति

प्रिय लोगों ने राजघाट गांधी की समाधि पर धरणा दिया। एक दिन मैंने भी धरणा दिया। प्रसन्नता की वात थी उस दिन सभी धर्म के अल्पसंख्यक गुरू शामिल थे। मुझे उनसे भेंट करने व साहित्य भेंट करने का अवसर मिला। मैंने अपने पूरे वर्ष केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों को इस संदर्भ में लिखा। अव कांग्रेस प्रधान श्रीमति सोनिया गांधी से देहली में जैनों ने यह मांग उठाई है। मुझे विश्वास है कि जल्द ही केन्द्र सरकार कोई ठोस कदम उठाएगी।

मैंने इस प्रकरण में उन संस्थाओं का संक्षिप्त पर महत्वपूर्ण वर्णन किया जिन की स्थापना मैंने साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से की थी। आचार्य सुशील कुमार जी महाराज के उपकार हम कैसे भूला सकते हैं जिन्होंने जैन धर्म को विश्व के कोने कोने तक पहुंचाया। उनके स्वर्ग वास से पहले ही साध्वी डा० साधना जी महाराज गुरूदेव को कार्यो को आगे वढ़ा रही थी। उनके स्वर्गवास के वाद उन्होंने आचार्य सुशील मुनि पर शोधनिवंध लिख कर डी.लिट. की डिगरी प्राप्त की। आचार्य सुशील गौ सदन, आचार्य सुशील मार्ग, आचार्य सुशील चौंक नई दिल्ली की स्थापना ही। होशियारपुर के पास एक हस्पताल का निर्माण पंजाव सरकार के सहयोग से करवाया। आचार्य सुशील मुनि के गुरू श्रद्धेय आचार्य सोभाग्य मुनि का आशीर्वाद भी कम नहीं रहा।

इसी प्रकार पंजावी भाषा में जैन साहित्य लिखने के कारण मुझे वहुत सारी पंजावी संस्थाओं का वुलावा आता रहता है। इन संस्थाओं ने हमारे जैन साहित्य का वहुत सन्मान किया है। इस कारण विद्वानों से मिलने का अवसर मिला है।

संस्थाओं के निर्माण के साथ साथ मुझे कुछ

संस्थाओं की सेवा करने का अवसर मिला। इन संस्थाओं की स्थापना कर व इन से जुड कर भी मेरी आस्था को बहुत बल मिला। मुझे अपने धर्म को फैलाने के लिए सुन्दर मंच मिला। संस्था के माध्यम से अपनी बात पहुंचाई जा सकती है। जो हम जन साधारण को कहना चाहते हैं वह अपनी इच्छा व शक्ति अनुसार कह सकते हैं। यह संस्था हमें नई पहचान देती है। इन के माध्यम से अपने किए कार्यों को प्रकट करने का अवसर मिलता है। जैन धर्म के बारे में जो जन साधारण में शंका पाई जाती है उन्हे दूर करने की कोशिश भी हो जाती है। कुल मिला कर यह संस्थाएं हमारे कार्य को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई है।

प्रकरण - ६

अवार्डों की स्थापना

किसी महापुरूष की स्मृति को ताजा रखने के कई ढंग हैं इन में अवार्ड का अपना स्थान है। साध्वी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज ने हमें ऐसे अवार्ड की स्थापना के लिए प्रेरणा दी जिनसे जैन धर्म व अहिंसा का प्रचार-प्रसार करने वालों का सम्मान हो। उन्हें किसी विशेष दिवस पर बुला कर समाज सम्मानित करे। उनके कार्यों से समाज परिचित हो। जब से जैन चेयर पटियाला की स्थापना हुई थी तब से हमारा संपर्क विद्वानों से निरंतर बनता रहा है। उनकी साहित्यक गतिविधियों का पता रहता है। पर उन्हें सम्मानित करने का ढंग अवार्ड से बढ़कर कोई नहीं लगा। यह सरल प्रक्रिया है, इस अवार्ड की कोई निश्चित राशि, स्थान नहो है। हां निश्चित तिथि जरूर हो सकती है। जब उस महापुरूष का जन्म, दीक्षा व पुनः जयंती हो अवार्ड दिया जा सकता है। एक कार्य कठिन है, वह है विद्वानों के कार्य का चुनाव। इस के लिए एक सब कमेटी का निर्माण हुआ। यह कमेटी अपना सुझाव साध्वी श्री को प्रेषित करती। हमारी संस्था २५वीं महावीर निर्वाण शताब्दी संयोजिका समिति पंजाब जो अब २६वीं महावीर जन्म कल्याणक शताब्दी संयोजिका समिति पंजाब को स्थान ले चुकी है, ने यह कार्य अपने हाथों मे लिया। इसी प्रकार के दो अवार्डों की स्थापना स्व० उप-प्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से की है। प्रथम अवार्ड हिन्दी भाषा की प्रथम जैन महिला लेखिका प्रवर्तनी साध्वी पार्वती जी महाराज को समर्पित है। दूसरा अवार्ड मेरे दादा स्व० श्री नाथ राम जी जैन कूनरा की